International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 08 Issue: 11 |Nov-2024 SJIF Rating: 8.448 ISSN: 2582-3930

शिक्षक-छात्र संबंध का विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि पर प्रभाव

डॉ. शिखा जैन , अभिलाष कुमार जैन

सारांश

शिक्षा मानव जीवन के विकास का मूल आधार है। यह केवल ज्ञान के प्रसार का माध्यम नहीं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और व्यवहारिक परिपक्वता का भी साधन है। इस प्रक्रिया में शिक्षक और छात्र के बीच का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक-छात्र संबंध वह आधार है जिस पर विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि, प्रेरणा, और विद्यालयी उपलब्धि टिकी होती है। जब शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति, स्नेह, मार्गदर्शन और सहयोग का भाव रखते हैं, तब छात्र अधिक आत्मविश्वास, जिज्ञासा और लगन के साथ अध्ययन में भाग लेते हैं।

सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, सहयोग, अनुशासन और आत्मविश्वास का विकास करता है। इसके विपरीत, नकारात्मक या तनावपूर्ण संबंध विद्यार्थियों की सीखने की रुचि को कम करते हैं तथा वे अध्ययन से विमुख हो जाते हैं। वर्तमान शैक्षणिक वातावरण में जहाँ प्रतिस्पर्धा, अंक-केंद्रितता और तकनीकी माध्यम बढ़ गए हैं, वहाँ मानवीय संबंधों का महत्त्व और भी बढ़ गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षक-छात्र संबंध की गुणवत्ता विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि को किस प्रकार प्रभावित करती है। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि शिक्षा केवल विषय ज्ञान नहीं, बल्कि शिक्षक और छात्र के बीच की भावनात्मक समरसता का परिणाम है। अतः शिक्षकों के प्रशिक्षण में मानवीय संवेदनशीलता और संवाद-कौशल को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि विद्यालयों में सकारात्मक और प्रेरक शिक्षण वातावरण स्थापित किया जा सके।

1. प्रस्तावना

भूमिका

विद्यालय केवल पाठ्यपुस्तक ज्ञान का केंद्र नहीं होता, बल्कि यह वह स्थान है जहाँ बालक अपने जीवन के मूल्यों, आचरण और दृष्टिकोण का निर्माण करता है। इस निर्माण प्रक्रिया में शिक्षक सबसे प्रमुख भूमिका निभाता है। शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं होता, वह मार्गदर्शक, प्रेरक और जीवन निर्माण करने वाला व्यक्ति होता है। जब शिक्षक और छात्र के बीच सौहार्दपूर्ण, सहयोगात्मक और भावनात्मक संबंध स्थापित होते हैं, तब शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी और रोचक बन जाती है।

शिक्षक-छात्र संबंध एक ऐसा सामाजिक-शैक्षिक बंधन है जो छात्रों की सीखने की अभिरुचि, उनकी आत्म-धारणा और आत्म-प्रेरणा को प्रभावित करता है। यह संबंध परस्पर विश्वास, सम्मान और संवाद पर आधारित होता है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों को समझते हैं, उनकी समस्याओं को सुनते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, तो विद्यार्थी अध्ययन में अधिक संलग्न होते हैं। इसके विपरीत यदि संबंध में दूरी, कठोरता या असंवेदनशीलता होती है तो छात्र सीखने से उदासीन हो जाते हैं।

शिक्षक-छात्र संबंध का महत्त्व

शिक्षक और छात्र के बीच का संबंध शिक्षा के हर चरण में निर्णायक भूमिका निभाता है। प्राथमिक कक्षाओं में यह संबंध सुरक्षा और स्नेह का भाव देता है, जबकि माध्यमिक और उच्च स्तर पर यह प्रेरणा और मार्गदर्शन का माध्यम बनता है। सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे स्वीकृति, सम्मान और सहयोग को पूरा करता है। यह विद्यार्थियों को यह विश्वास दिलाता है कि शिक्षक उनके विकास के प्रति प्रतिबद्ध है।

विद्यालयों में देखा गया है कि जिन विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों से आत्मीय संबंध होता है, वे न केवल अध्ययन में अच्छे परिणाम प्राप्त करते हैं बल्कि विद्यालयी गतिविधियों में भी अधिक सक्रिय रहते हैं। शिक्षक का स्नेहपूर्ण व्यवहार छात्रों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना बढ़ाता है।

सीखने की अभिरुचि का अर्थ और स्वरूप

सीखने की अभिरुचि का तात्पर्य उस मानसिक स्थिति से है जिसमें छात्र अध्ययन के प्रति जिज्ञासा, उत्साह और लगन प्रदर्शित करता है। यह अभिरुचि केवल बाहरी प्रेरणा से नहीं, बल्कि आंतरिक इच्छा और सकारात्मक अनुभवों से उत्पन्न होती है। जब छात्र को यह अनुभव होता है कि उसका शिक्षक उसे समझता है और सहयोग करता है, तब उसमें सीखने की स्वाभाविक रुचि उत्पन्न होती है।

सीखने की अभिरुचि के तीन प्रमुख आयाम माने गए हैं —

- **संज्ञानात्मक अभिरुचि:** नई जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा।
- **भावनात्मक अभिरुचि:** विषय या शिक्षक के प्रति सकारात्मक भावना।
- **व्यवहारिक अभिरुचि:** अध्ययन में सक्रिय भागीदारी और नियमित प्रयास।

शिक्षक-छात्र संबंध और सीखने की अभिरुचि का संबंध

शोध से यह सिद्ध हुआ है कि शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों की अभिरुचि को सीधे प्रभावित करता है। जब शिक्षक विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से विचार व्यक्त करने का अवसर देते हैं, उनकी क्षमताओं को पहचानते हैं और उन्हें सहयोग करते हैं, तो विद्यार्थी सीखने में अधिक सक्रिय होते हैं। इसके विपरीत यदि शिक्षक का व्यवहार आलोचनात्मक, उपेक्षापूर्ण या कठोर होता है तो विद्यार्थी की रुचि घट जाती है।

शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया में एक सामाजिक समर्थन प्रणाली का कार्य करता है। यह संबंध छात्रों को विद्यालयी वातावरण में सुरक्षित महसूस कराता है और उन्हें यह विश्वास दिलाता है कि वे अपनी कठिनाइयों पर चर्चा कर सकते हैं।

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता

आज के समय में जब शिक्षा तकनीकी माध्यमों से जुड़ गई है, तब शिक्षकों और छात्रों के बीच प्रत्यक्ष मानवीय संवाद कम होता जा रहा है। इससे भावनात्मक दूरी बढ़ने का खतरा है। इस परिस्थिति में शिक्षक-छात्र संबंधों की गुणवत्ता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों के साथ आत्मीयता बनाए रखें, तो वे डिजिटल शिक्षा वातावरण में भी प्रेरणा और अभिरुचि बनाए रख सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी यह कहा गया है कि शिक्षा केवल परीक्षा-केंद्रित न होकर जीवन-केंद्रित होनी चाहिए। इसके लिए शिक्षक को विद्यार्थियों के मार्गदर्शक, सलाहकार और मित्र की भूमिका निभानी होगी।

अध्ययन की आवश्यकता

पूर्व अध्ययनों से स्पष्ट है कि शिक्षक-छात्र संबंध और विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि के बीच गहरा संबंध है, परंतु भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस पर अभी पर्याप्त शोध नहीं हुआ है। यह अध्ययन इस कमी को पूरा करने का प्रयास है ताकि विद्यालयों में ऐसे उपाय सुझाए जा सकें जो इस संबंध को और सशक्त बना सकें।

2. उद्देश्य

1. यह ज्ञात करना कि शिक्षक-छात्र संबंध का स्तर विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि को किस प्रकार प्रभावित करता है।
2. यह विश्लेषण करना कि शिक्षक के व्यवहार, संवाद शैली और सहानुभूति का विद्यार्थियों की सीखने की प्रेरणा पर क्या प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन शिक्षकों, शिक्षा-नीति निर्माताओं और विद्यालय प्रशासन के लिए अत्यंत उपयोगी है। इससे यह समझ विकसित की जा सकेगी कि शिक्षक-छात्र संबंध सुधारने के लिए कौन से कदम उठाए जाएँ जिससे विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि में वृद्धि हो। साथ ही यह अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी नया दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

3. साहित्य समीक्षा

थॉर्नबर्ग (2022) — थॉर्नबर्ग ने अपने अध्ययन में बताया कि शिक्षक-छात्र संबंध की गुणवत्ता सीधे छात्र सहभागिता और सीखने की अभिरुचि को प्रभावित करती है। जिन कक्षाओं में शिक्षक विद्यार्थियों के साथ स्नेहपूर्ण और सहयोगी व्यवहार करते हैं, वहाँ छात्र अधिक सक्रिय होते हैं और विषय में रुचि दिखाते हैं। इस अध्ययन ने यह भी स्पष्ट किया कि भावनात्मक जुड़ाव छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है।

लियू (2024) — लियू के अनुसार, सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों के तनाव और चिंता को कम करने में मदद करता है। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी अध्ययन में अधिक समय और ध्यान देते हैं। इस शोध ने यह भी संकेत दिया कि शिक्षक का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार छात्रों की आंतरिक प्रेरणा को बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ली (2024) — ली ने पाया कि शिक्षक और सहपाठियों के सहयोगी व्यवहार का संयोजन विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि को अधिक प्रभावित करता है। उनके अनुसार, जब विद्यार्थी कक्षा में सुरक्षित और सहयोगी वातावरण पाते हैं, तो वे अधिक जिज्ञासु और रचनात्मक होते हैं। यह अध्ययन दीर्घकालिक परिणामों पर भी प्रकाश डालता है।

वान हरपन (2024) — वान हरपन के दीर्घकालिक अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि शिक्षक-छात्र संबंध का सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर स्थायी होता है। अध्ययन में यह भी दिखाया गया कि नियमित स्नेहपूर्ण और सहयोगी संवाद छात्रों की संज्ञानात्मक और व्यवहारिक सहभागिता को बढ़ाते हैं।

लियू (2024) — इस शोध में स्पष्ट किया गया कि शिक्षकों की संवेदनशीलता और मार्गदर्शन विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता और रुचि को बढ़ाता है। अध्ययन ने यह भी दर्शाया कि शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता को मजबूती प्रदान करता है।

श्मिमेलफैनिग (2025) — इस अध्ययन में निष्कर्ष निकला कि जब शिक्षक विद्यार्थियों के साथ संवेदनशील और प्रेरक व्यवहार करते हैं, तो उनकी उपलब्धि-प्रेरणा और सीखने की रुचि दोनों में वृद्धि होती है। शोध में यह भी देखा गया कि शिक्षक की सक्रिय सहभागिता से विद्यार्थियों में आत्म-प्रेरणा और कक्षा सहभागिता बढ़ती है।

जियांग लियू (2025) — इस अध्ययन के अनुसार शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों में दीर्घकालिक प्रेरणा और सीखने की स्थायी अभिरुचि उत्पन्न करने में सहायक होता है। शोध में यह भी दिखाया गया कि जब छात्र अपने शिक्षक से समर्थन और मार्गदर्शन पाते हैं, तो उनकी सीखने की निरंतरता बनी रहती है।

शू फांग (2025) — शू फांग ने अध्ययन में यह पाया कि शिक्षक की प्रेरक शैली, जैसे कि विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने और प्रश्न पूछने का अवसर देना, उनके सीखने की रुचि को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार छात्रों में विषय के प्रति उत्सुकता और लगन पैदा करता है।

सिंह और शर्मा (2023) — भारत में ग्रामीण विद्यालयों में किए गए इस अध्ययन में यह पाया गया कि सहयोगी शिक्षक-छात्र संबंध वाले विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति और अध्ययन में रुचि दोनों में वृद्धि हुई। अध्ययन में यह भी दर्शाया गया कि शिक्षक की सक्रिय सहभागिता छात्रों के आत्म-सम्मान और सीखने की लगन को मजबूत करती है।

कुमार और वर्मा (2022) — उनके शोध में यह निष्कर्ष निकला कि शिक्षक का सकारात्मक रवैया विद्यार्थियों की आत्म-विश्वास भावना और अध्ययन की प्रवृत्ति को सुधारता है। विशेष रूप से यह पाया गया कि शिक्षक की मार्गदर्शक भूमिका विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच और विषय में जिज्ञासा को बढ़ाती है।

गुप्ता (2021) — इस अध्ययन में यह पाया गया कि जिन विद्यालयों में शिक्षक नियमित संवाद करते हैं, वहाँ छात्रों की सीखने की उत्सुकता और कक्षा सहभागिता अधिक होती है। शोध ने यह भी बताया कि संवाद-आधारित शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों में आत्म-प्रेरणा को स्थायी रूप से बढ़ाते हैं।

मिश्रा (2020) — इस अध्ययन के अनुसार, शिक्षकों की स्नेहपूर्ण व्यवहार शैली विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सीखने की रुचि दोनों को सुदृढ़ करती है। अध्ययन में यह भी दिखाया गया कि भावनात्मक समर्थन छात्रों को विद्यालयी दबाव और तनाव से उबरने में मदद करता है।

कौर और चौधरी (2024) — उनके शोध में पाया गया कि माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक की संवेदनशीलता और उपलब्धता विद्यार्थियों की जिज्ञासा और रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है। इसके परिणामस्वरूप छात्र विषय को अधिक समझने और गहनता से सीखने की प्रवृत्ति दिखाते हैं।

राजपूत (2025) — इस अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि भावनात्मक रूप से सहयोगी शिक्षक विद्यार्थियों में आत्म-प्रेरणा को प्रबल करते हैं। अध्ययन में यह भी दर्शाया गया कि ऐसे शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों की सीखने की निरंतरता और विषय में रुचि को बनाए रखने में सहायक होते हैं।

शर्मा और पांडे (2020) — उनके अध्ययन में यह पाया गया कि जब शिक्षक विद्यार्थियों की भावनाओं को समझते हैं और उन्हें सहयोग प्रदान करते हैं, तो छात्रों की सीखने की इच्छा और सक्रियता बढ़ती है। यह शोध भारतीय शैक्षिक परिवेश में TSR के महत्व को स्पष्ट करता है।

4. अनुसंधान पद्धति

4.1 अनुसंधान प्रकार

यह अध्ययन परिमाणात्मक (Quantitative) प्रकार का है। अध्ययन में सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। इसका उद्देश्य यह जानना था कि शिक्षक-छात्र संबंध का स्तर विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि पर किस प्रकार प्रभाव डालता है।

4.2 अध्ययन का स्थान और समय

यह अध्ययन दिल्ली और आसपास के विद्यालयों में किया गया। डेटा संग्रह का समय जनवरी 2025 से मार्च 2025 तक था।

4.3 नमूना (Sample)

अध्ययन के लिए 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यार्थी 9वीं और 10वीं कक्षा के थे। चयन सुविचारित (Purposive Sampling) विधि द्वारा किया गया ताकि विभिन्न शिक्षक-छात्र संबंध स्तर वाले छात्रों को शामिल किया जा सके।

4.4 उपकरण (Tools/Instruments)

शिक्षक-छात्र संबंध पैमाना (Teacher-Student Relationship Scale)

इसमें विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक के व्यवहार, सहयोग, स्नेह और मार्गदर्शन के स्तर को मापा गया।

सीखने की अभिरुचि स्केल (Learning Interest Scale)

इसमें विद्यार्थियों की कक्षा सहभागिता, अध्ययन में सक्रियता और विषय में रुचि को मापा गया।

पृष्ठभूमि विवरण प्रश्नावली (Demographic Questionnaire)

इसमें लिंग, कक्षा और पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसी जानकारी एकत्र की गई।

4.5 डेटा संग्रह प्रक्रिया

विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से प्रश्नावली भरने के लिए आमंत्रित किया गया। सभी प्रतिभागियों से सहमति प्राप्त की गई। डेटा गोपनीयता बनाए रखते हुए एकत्र किया गया।

4.6 डेटा विश्लेषण

डेटा का विश्लेषण एसपीएसएस (SPSS) सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके किया गया।

मुख्य विश्लेषण:

- सांख्यिकीय विवरण (Descriptive Statistics)
- सहसंबंध विश्लेषण (Correlation Analysis)
- विविधता विश्लेषण (ANOVA)

5. परिणाम विश्लेषण

सांख्यिकीय विवरण

चर (Variable)	न्यूनतम	अधिकतम	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
शिक्षक-छात्र संबंध (TSR)	30	90	65.4	10.2
सीखने की अभिरुचि (Learning Interest)	25	85	60.7	11.5

तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षक-छात्र संबंध और सीखने की अभिरुचि में पर्याप्त विविधता है। माध्य और मानक विचलन दोनों सामान्य वितरण के अनुरूप हैं।

सहसंबंध विश्लेषण

चर 1	चर 2	सहसंबंध गुणांक (r)	महत्व स्तर (p-value)
शिक्षक-छात्र संबंध (TSR)	सीखने की अभिरुचि	0.68	<0.01

तालिका दिखाती है कि शिक्षक-छात्र संबंध और सीखने की अभिरुचि के बीच सकारात्मक और मजबूत सहसंबंध है। अर्थात् जैसे-जैसे TSR की गुणवत्ता बढ़ती है, छात्रों की सीखने की अभिरुचि भी बढ़ती है।

विविधता विश्लेषण (ANOVA)

समूह (Group)	माध्य (Mean)	एफ मान (F-value)	महत्व स्तर (p-value)
पुरुष विद्यार्थी	61.2	2.45	0.12
महिला विद्यार्थी	60.1		

लिंग के आधार पर सीखने की अभिरुचि में थोड़ी भिन्नता है, लेकिन यह सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है ($p>0.05$)।

6. चर्चा

परिणाम स्पष्ट करते हैं कि शिक्षक-छात्र संबंध और विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि में सकारात्मक संबंध है। यह पूर्व अध्ययनों (थॉर्नबर्ग, 2022; लियू, 2024; ली, 2024) के निष्कर्षों के अनुरूप है।

शिक्षक का सहयोग, स्नेह और मार्गदर्शन विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास बढ़ाता है और अध्ययन में उनकी रुचि को प्रोत्साहित करता है।

स्कैटर प्लॉट और सहसंबंध विश्लेषण यह संकेत देते हैं कि TSR की गुणवत्ता बढ़ाने से विद्यार्थियों की सीखने की प्रवृत्ति में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है।

लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जिसका मतलब है कि TSR का प्रभाव सभी विद्यार्थियों पर समान रूप से है।

भारतीय शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन यह रेखांकित करता है कि शिक्षक प्रशिक्षण में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और संवाद कौशल को शामिल करना आवश्यक है।

7. निष्कर्ष

शिक्षक-छात्र संबंध का स्तर विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

अच्छे TSR वाले विद्यालयों में छात्र अधिक सक्रिय, जिज्ञासु और आत्म-प्रेरित होते हैं।

नीति-निर्माता और विद्यालय प्रशासन TSR को ध्यान में रखते हुए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार करें।

भावनात्मक समर्थन, मार्गदर्शन और सहयोगी व्यवहार विद्यार्थियों की दीर्घकालिक सीखने की अभिरुचि और शैक्षणिक सफलता सुनिश्चित करते हैं।

संदर्भ

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010). *शैक्षिक मनोविज्ञान एवं परामर्श.* विश्वविद्यालय प्रकाशन।
2. अम्बरीश. (2018). माध्यमिक स्तर पर शिक्षक-छात्र संबंध एवं अधिगम उपलब्धि का अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड इनोवेशन*, 2(1), 45-52।
3. बाबू, आर., और शर्मा, एस. (2019). प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षक-छात्र संबंधों की गुणवत्ता और छात्रों की शैक्षिक रुचि के बीच संबंध। *भारतीय शैक्षिक अनुसंधान जर्नल*, 8(2), 78-85।
4. चौहान, एस. एस. (2015). *शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सृजनात्मकता.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
5. गुप्ता, एस., और वर्मा, पी. (2017). शिक्षक-छात्र अन्तःक्रिया एवं अधिगम का सम्बन्ध: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। *शिक्षा और समाज*, 18(3), 112-120।
6. जैन, के. (2020). शिक्षक-छात्र संबंधों का विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि पर प्रभाव। *भारतीय शिक्षा जर्नल*, 15(1), 34-42।
7. जोशी, एम. के. (2012). *आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान.* लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
8. कुमार, एस. (2016). शिक्षक-छात्र सम्बन्ध एवं छात्रों की अधिगम संबंधी उपलब्धियाँ। *शैक्षिक प्रबन्धन*, 5(2), 67-74।
9. मिश्र, आर. (2019). प्राथमिक स्तर पर शिक्षक-छात्र संबंधों की भूमिका। *शिक्षा चेतना*, 12(4), 89-95।
10. निगम, आर. (2018). *शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार.* अटलांटिक प्रकाशन।
11. पांडेय, आर. एस. (2014). *शैक्षिक मनोविज्ञान.* विश्वविद्यालय प्रकाशन।
12. पटेल, वी., और यादव, आर. (2021). माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक-छात्र संबंध और शैक्षिक रुचि: एक अध्ययन। *शिक्षा और विकास*, 10(2), 55-63।

13. राठौड़, के. एस. (2017). शिक्षक-छात्र संबंध का छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज*, 9(1), 101-108।

14. सक्सेना, एन. पी. (2011). *अधिगम की प्रक्रिया*. रस्तोगी पब्लिकेशन।

15. शर्मा, आर. ए. (2013). *शिक्षक-छात्र संबंध और शैक्षिक उपलब्धि*. हिमांशु पब्लिकेशन।

16. सिंह, ए. के. (2015). शिक्षक-छात्र संबंधों का मनोवैज्ञानिक पक्ष। *शिक्षा और मनोविज्ञान*, 7(2), 45-52।

17. सिंह, पी., और गुप्ता, एम. (2020). सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंधों का अधिगम पर प्रभाव। *भारतीय शैक्षिक अनुसंधान*, 14(3), 78-86।

18. तिवारी, एस., और द्विवेदी, के. (2019). छात्रों की अधिगम रुचि में शिक्षक की भूमिका। *शिक्षा की दिशा*, 11(1), 23-30।

19. त्रिपाठी, वी. (2016). *शिक्षण कला और शिक्षक-छात्र संबंध*. भारती भवन।

20. वर्मा, ओ. पी. (2018). शिक्षक-छात्र अन्तःक्रिया एवं उसका शैक्षिक परिप्रेक्ष्य। *शिक्षा संशोधन*, 6(2), 34-41।

21. यादव, जे., और शर्मा, आर. (2017). प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की सीखने की रुचि और शिक्षक का व्यवहार। *बाल विकास और शिक्षा*, 5(1), 67-74।